

कृष्ण चालोसा

दोहा 1

बंशी शोभित कर मधुर, नील जलद तन श्याम।
अरुण अधर जनु बिम्बफल, नयन कमल अभिराम॥

दोहा 2

पूर्ण इन्द्र, अरविन्द मुख, पीताम्बर शुभ साज।
जय मनमोहन मदन छवि, कृष्णचन्द्र महाराज॥

चौपाई 1

जय यदुनन्दन जय जगवन्दन।
जय वसुदेव देवकी नन्दन॥

चौपाई 2

जय यशुदा सुत नन्द दुलारे।
जय प्रभु भक्तन के दृग तारे॥

चौपाई 3

जय नटनागर नाग नथइया।
कृष्ण कन्हैया धेनु चरइया॥

चौपाई 4

पुनि नख पर प्रभु गिरिवर धारो।
आओ दीनन कष्ट निवारो॥

चौपाई 5

बंशी मधुर अधर धरि टेरी।
होवे पूर्ण विनय यह मेरी॥

चौपाई 6

आओ हरि पुनि माखन चाखो।
आज लाज भारत की राखो॥

चौपाई 7

गोल कपोल, चिबुक अरुणारे।
मृदु मुस्कान मोहिनी डारे॥

चौपाई 8

रंजित राजिव नयन विशाला।
मोर मुकुट वैजन्ती माला॥

चौपाई 9

कुण्डल श्रवण पीतपट आछे।
कटि किंकिणी काछन काछे॥

चौपाई 10

नील जलज सुन्दर तनु सोहे।
छवि लखि सुर नर मुनि मन मोहे॥

चौपाई 11

मस्तक तिलक अलक घुँघराले।
आओ कृष्ण बाँसुरी वाले॥

चौपाई 12

करि पय पान, पूतनहिं तार्यो।
अका बका कागासुर मार्यो॥

चौपाई 13

मधुवन जलत अग्नि जब ज्वाला।
भये शीतल लखितहिं नन्दलाला॥

चौपाई 14

सुरपति जब ब्रज चढ्यो रिसाई।
मूसर धार वारि वर्षाई॥

चौपाई 15

लगत-लगत ब्रज चहन बहायो।
गोवर्धन नख धारि बचायो॥

चौपाई 16

लखि यसुदा मन भ्रम अधिकाई।
मुख मैंह चौदह भुवन दिखाई॥

चौपाई 17

दुष्ट कंस अति उधम मचायो।
कोटि कमल जब फूल मैंगायो॥

चौपाई 18

नाथि कालियहिं तब तुम लीन्हें।
चरण चिह्न दै निर्भय कीन्हें॥

चौपाई 19

करि गोपिन संग रास विलासा।
सबकी पूरण करी अभिलाषा॥

चौपाई 20

केतिक महा असुर संहार्यो।
कंसहिं केस पकड़ि दै मार्यो॥

चौपाई 21

मात-पिता की बन्दि छुड़ाई।
उग्रसेन कहँ राज दिलाई॥

चौपाई 22

महि से मृतक छहों सुत लायो।
मातु देवकी शोक मिटायो॥

चौपाई 23

भौमासुर मुर दैत्य संहारी।
लाये षट दस सहस्र कुमारी॥

चौपाई 24

दै भीमहिं तृण चीर सहारा।
जरासिंधु राक्षस कहँ मारा॥

चौपाई 25

असुर बकासुर आदिक मार्यो।
भक्तन के तब कष्ट निवार्यो॥

चौपाई 26

दीन सुदामा के दुःख टार्यो।
तंदुल तीन मूठि मुख डार्यो॥

चौपाई 27

प्रेम के साग विदुर घर माँगे।
दुर्योधन के मेवा त्यागे॥

चौपाई 28

लखी प्रेम की महिमा भारी।
ऐसे श्याम दीन हितकारी॥

चौपाई 29

भारत के पारथ रथ हाँके।
लिए चक्र कर नहिं बल थाके॥

चौपाई 30

निज गीता के ज्ञान सुनाये।
भक्तन हृदय सुधा वर्षाये॥

चौपाई 31

मीरा थी ऐसी मतवाली।
विष पी गई बजाकर ताली॥

चौपाई 32

राणा भेजा साँप पिटारी।
शालिग्राम बने बनवारी॥

चौपाई 33

निज माया तुम विधिहिं दिखायो।
उर ते संशय सकल मिटायो॥

चौपाई 34

तव शत निन्दा करि तत्काला।
जीवन मुक्त भयो शिशुपाला॥

चौपाई 35

जबहिं द्रौपदी टेर लगाई।
दीनानाथ लाज अब जाई॥

चौपाई 36

तुरतहि वसन बने नन्दलाला।
बढ़े चीर भये अरि मुँह काला॥

चौपाई 37

अस अनाथ के नाथ कन्हैया।
डूबत भँवर बचावत नइया॥

चौपाई 38

सुन्दरदास आस उर धारी।
दयादृष्टि कीजै बनवारी॥

चौपाई 39

नाथ सकल मम कुमति निवारो।
क्षमहु बेगि अपराध हमारो॥

चौपाई 40

खोलो पट अब दर्शन दीजै।
बोलो कृष्ण कन्हैया की जय॥

समापन दोहा

यह चालीसा कृष्ण का, पाठ करै उर धारि।
अष्ट सिद्धि नवनिधि फल, लहै पदारथ चारि॥